प्रो.पालीवाल को वर्ष 2009 का डॉ. राम विलास शर्मा आलोचना सम्मान

वर्धा,14 अक्टूवर2010; महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता व सुप्रसिद्ध साहित्य आलोचक प्रो. सूरज पालीवाल को वर्ष 2009 का डॉ.राम विलास शर्मा आलोचना सम्मान दिए जाने का निर्णय हुआ है। दिल्ली विश्वविद्यालय की प्रो. निर्मला जैन, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, साहित्यकार भारत भारद्वाज डॉ राम विलास शर्मा आलोचना सम्मान के ज्यूरी कमिटी में थे। हिंदी साहित्य जगत में आलोचना के श्लाका पुरूष डॉ. राम विलास शर्मा की स्मृति में यह पुरस्कार दिया जाता है, हाल ही में केदारनाथ अग्रवाल की जन्म शताब्दी पर आयोजित समारोह में प्रदान किया जाएगा। पुरस्कार स्वरूप नगद राशि, प्रशस्ति पत्र, पदक, शॉल आदि प्रदान की जाएगी। यह घोषणा डॉ.राम विलास शर्मा आलोचना सम्मान समिति के संयोजक नरेन्द्र पुंडरिक ने की है।

डॉ.राम विलास शर्मा आलोचना पुरस्कार के लिए संबंधित निर्णय की प्रशस्ति में कहा गया है कि "डॉ. सूरज पालीवाल ने अबतक अपने लेखन से 'संबोधन' और 'वर्तमान साहित्य' के अपने स्तम्भों के अतिरिक्त रेणु के कथा संसार, आलोचना के प्रसंग, 'मैला आंचल, एक विमर्श के साथ साहित्य और इतिहास दृष्टि', 'महाभोज का महत्व', 'समकालीन हिंदी उपन्यास' आदि की रचना की। पालीवाल की मार्क्सवादी आलोचना दृष्टि रूढ नहीं गतिशील है, वस्तुत; हिंदी में भूमंडलीकरण का प्रभाव और प्रतिरोध की तीव्रता और तीक्ष्णता यदि वे महसूस करते हैं तो यह साहित्य के प्रति अनुराग है।" प्रशस्ति में कहा गया है कि "समकालीन आलोचना के सामने आज कई बडी चुनौतियां हैं। ऐसी स्थिति में यह देखने की जरूरत होती है कि हिंदी आलोचना को कैसे पटरी पर लाया जाय।"

गौरतलब हो कि सन् 1952 में मथुरा जिले के ग्राम बरौठ में जन्मे प्रो. पालीवाल ने अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय से फणीश्वर नाथ रेणु का कथा संसार विषय पर पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। इस दौरान ही वे रचना संसार में लेखन कार्य से जुड गए। फणीश्वर नाथ रेणु का कथा संसार, रचना का सामाजिक आधार, संवाद की तह में, आलोचना के प्रसंग, मैला आंचल:एक विमर्श, साहित्य और इतिहास दृष्टि, महाभोज का महत्व, समकालीन हिंदी उपन्यास, हिंदी में भूमंडलीकरएण का प्रभाव और प्रतिरोध, आलोचना साहित्य जगत में शामिल हैं। दलित विषय पर उनकी पहली कहानी 1981 ई. में 'कथन' पत्रिका में छपी, जिनकी चर्चा खूब हुई थी। उनकी टीका प्रधान व जंगल कहानी संग्रह संग्रह हैं। साहित्यिक जगत के चर्चित हस्ती प्रो. पालीवाल को सन् 1991 में डॉ. आंबेडकर नेशनल फैलोशिप, वर्ष 2002 में पंजाब कला एवं साहित्य अकादमी से तथा वर्ष 2005 में प्रेमचन्द पुरस्कार से सम्मानित हो चुके हैं। प्रो.पालीवाल को डॉ. रामविलास शर्मा आलोचना सम्मान से सम्मानित किए जाने की घोषणा पर महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति साहित्यकार विभूति नारायण राय ने अपने बधाई संदेश में कहा कि प्रो. पालीवाल अपने समय के महत्वपूर्ण आलोचक हैं। उनकी आलोचना में समय के संघर्ष और चुनौतियां साफ-साफ दिखाई देती हैं। उनके सरोकार मानवीय पक्षधारता को लेकर है। उन्हें डॉ. रामविलास शर्मा आलोचना सम्मान मिलना न केवल उनकी आलोचना की पहचान के लिए महत्वपूर्ण है अपितु हमारे विश्वविद्यालय के लिए भी यह एक गौरवपूर्ण क्षण है।

प्रस्तुति:- अमित कुमार विश्वास